

दयादिशिक्षिदं परस्परतः ॥ गृहे कर्म कृत्वा गान्धर्वं च ॥ ३ ॥ अथ कृत्वा स्वर्गं कर्तुं
न कहनु ॥ अथ को को दुःखं आ पु ले कृता शिदन् ॥ अथ को को दोष भय प्र वि कृ द्वा ले आ प्र
अथ लुका या जै दोष को कुरा गुण ग रि दोष मि न्नु ॥ ४ ॥ मन सा वि न ये दोष व व व
न प्र का श ये न्नु ॥ मंत्र ले दा रा गू द्वा त्मा कार्य शि दि श्च जा य ते ॥ ५ ॥ के हि का ज भ या प्र
नि म न ले वि ता उ नु मू ख ले प्र का श न ग ए ॥ मंत्र जै गु ण ग रि रा ष नु कार्य मि दि ह
ह न्नु ॥ ॥ उप कार म्हे न न श च्च ना श च्च मु द्ध ये न्नु पा द ल ग न कर र्थे न वं श ठ के न व
कं ए ठ के ॥ ६ ॥ उप कार भ न्ना को श च्च ले ग ना प्र मि ह्नु क र्त्ता भ य द्वा ज नि न्ना को का

॥ वान ॥

॥ २३ ॥

एलिनु ॥ ११ ॥ प्रभू ते वाज्य मूल्य वा यो नरक ते निदुनि स ॥ १२ ॥ न युन कार्य सिंहाय क दि
वाय ते ॥ २२ ॥ केहि काम गे दो सिद्ध न गरि न छोड नु योय क गुण शि ह को लिनु ॥ २३ ॥
दिया निउ संयस्य क वचन डि तो नर ॥ कार्य काले प्रयत्न नि सवे कार्य नि सव
येत ॥ २४ ॥ वकुला जे खाफ नु कार्य न ऊं जाल शो न भै रहनु काज को ओ सर प
पदि सवे काज को साधना गरि ॥ यो वकुला को गुण से कलिनु प्राग था नेव
युद्ध संविभा गं व व व ॥ स्त्री यमा कं प भं जित शो से त ॥ कुंज व न ॥
प्राते उठ नु शत्रु शी त युद्ध गरि आफना दोय भाई वरो वर द धन ॥ स्त्री के प ॥

राम

२३

॥ २४ ॥ कसो भन्या फूल शित गा सिया को घास पानि सर मार हं ॥ २५ ॥ विर ॥
संय के स्वभावो डरति कम ॥ यस्या व फल मध्ये स्वका यो नो म्हा नो गतः ॥ २६ ॥
भला को संग भया ले स्वभाव ना दु द देन ॥ खाप भिन्न को को ना ठ रै ॥ २७ ॥
राव सु गंधे न मध्ये निर्म प्र ति स्थित ॥ मधु की र समा तृष्टि नि स्व किं मधु रा गते ॥
॥ २८ ॥ सषर मा नि स मरो पल ॥ दू ड म ह द देर हनु ते प नि नि मा ते नै हु नू ॥ न स
र्थ स्वभाव कि दै न ॥ ॥ सुल के उ च या ति या पर ह मे पु रा द ॥ कार्य का लेव
संघा ने न श दि शान न द न ॥ ॥ ५५ ॥ सुल क मा ले या व दि या ॥ ॥ ५६ ॥ का हात मा

रसाकोधनकाजकाधरेमालादेन ॥ इरस्थानिचमिनीशिः ॥ ३॥ जनिद्वयश्रवाः ॥
 ॥ वान ॥ किंप्रयोजकतयमर्थितोनिस्फला निर ॥ दावाकोमित्रनेहन ॥ ४॥ कोभाप्र
 ॥ २॥ योजनछ ॥ काममानलाग्यापछिनिस्फलहो ॥ ५॥ अतवातुमनुया निरस्थानिच
 वानवा ॥ कानावारेव्यरुपाचयः कालेजापतिवृत्ति ॥ ५॥ वनकाफलदाइको ॥ ६॥
 कोभाप्रयोजनछ ॥ यतिकोजमापाईदेन ॥ भिनामालेव्यकात्रिचकारजसोहे
 ॥ ५॥ प्रजावचनहिनश्चधर्महिनसुयो नर ॥ निरर्थावेतनातस्यभलन ॥ ६॥ नयेव
 था ॥ ५॥ अशानिकावचनजात्याकोकार्यवाधेहेक ॥ नमनाधरा निमायुखस्य

राम
 २२

नयश्चति ॥ ७८ ॥ जनेदेवीकोकानुपनिकेहीदेवदेन ॥ धनतुलाडन्यालेपानकेहीदेव
 देन ॥ ७९ ॥ जीर्णमनंप्रसंशोनभावाचगनयौवन ॥ रणाप्रत्यागतभूरससंतगृहमा
 गत ॥ ८० ॥ अन्धवायाकोपन्यानिको ॥ वयसगयाकीस्त्रीनिको ॥ संग्रामदेवीद्वरप
 काकीश्रूरीनिको ॥ ८१ ॥ लक्ष्मीलक्षणाहीनेचकुलहीनेसरस्वती ॥ अथात्रेभनेना
 रीगिरोवर्षतिवाशव ॥ ८२ ॥ अलक्षणाकुन्याछेउकिलक्ष्मीहीन ॥ कुलमावस्थाकि
 सरस्वति ॥ ८३ ॥ दृष्टिजातमालयभयाकिस्त्रीईद्वलेपर्वतमापानिपायाजसोव्य
 र्थजाछ ॥ ८४ ॥ यस्यभावाखरुपाचभनोरमनगाभिनी ॥ निरमभभायीचसा

भिया नभिया भिया ॥ ७१ ॥ जसो स्त्री रात्री छ पुरुष ले मन्मा को मोद हें श्रीनि वरुन वो
 लहे ॥ नत्का पुरुष बुछो भया पनि दिन दिन नत्का रोहुंछ ॥ यस भाया विरु
 या कसली कलह छिय ॥ ७२ ॥ रत्न रवा दिवसा गरान्त जरा जरा ॥ ७३ ॥ जसो
 स्त्री न रात्री छ ॥ सदा कलह गन्या लो ग्या नउत्तरोत्तर जका पूगन्या ॥ त्यो स्त्री को पुरु
 ष वा डै बुछो डै ॥ ७४ ॥ यस भाया गृहे नि संभनि संपरिवर्जयेत् ॥ तस्य सिद्धं नि ॥ राम ॥
 गावाणि पश्विनी वहि मा गने ॥ ७५ ॥ जसो स्त्री पुरुष वन ककर कराया जै खे गछे ॥ ३३ ॥
 नत्का पुरुष को शरीर हिउं दो को कमल सुखा जै सुकि जाछ ॥ यस भाया गृहे नि

तं मात्रैव हित कारिणी ॥ वर्धते तस्य गात्राणि शुक्ल पदो यथा शशी ॥ ७६ ॥ जसो स्त्री अ
 माले हित गर्ज जै पुरुष वन निको गर्दछ ॥ तसो शरिर शुक्ल पदो का चंद्र मा जै
 वध छे नू ॥ किं जानै वरु भि पुत्रै शोक संताप कारकै ॥ वर मे ककाल ले मी यत्र
 विश्राम ते कुल ॥ ७७ ॥ शोक संताप दिन्या धेरै होरा भया ले का गर्दछ ॥ कल माधा
 रिन्या से कै पुत्र भ्रष्ट हुनू ॥ ७८ ॥ यका भाया त्रयो पुत्रो देह लोद शधे नव ॥ कल्प
 का लाव शाने पिन ते या शंति वि क्रिया ॥ ७९ ॥ स्त्री यक को होरा तिनु दुई हुन गार्द
 दश ॥ यति हुन्या को कै के पनि विग्रं देन ॥ ८० ॥ सेव या वरुन पुत्र गयो नो दीव

जेत ॥ यजेने वाच मेधन निलवाच समुत्तजेत ॥ ८७ ॥ देरे होरा हवरा भनि वाका ग
 ॥ नन ॥ ॥ देरे होरा भयाप छि सेक होरा ना गया तिर्थ जाला ॥ तिर्थ जाया कन भ स्व मे
 ॥ ३४ ॥ धय गगना को फलार ॥ मील को वसा हा दान गगना को पुरोप तल्लाई पाई छ ॥
 सेके न शुक्ल द्वे दोषा दख माने न वक्रिना ॥ दखे ते तदनं सर्व सु पुत्रेण कुलं य
 था ॥ ८८ ॥ शुक्ला को रक द्वे दोषा या गोला या सवै वन उध दद ॥ तले कु पुत्र ले
 कुल को नाश गर्ह नू ॥ ॥ सेके ना पिसु द्वे दोषा वन तेन सुगंधिना ॥ वासि ते
 तदनं सर्व सु पुत्रेण कुलं यथा ॥ ८९ ॥ वन माय क द्वे दोषा सुगंध फल फल हर

॥ राम ॥
 ॥ ३४ ॥

सवै वन सुगंध गर्ह ॥ तले सु पुत्र ले कुल को उधार गर्ह नू ॥ ॥ यस्य पुत्रो वशा भ
 ना भार्या छ दानु वर्तिनी ॥ विभवे य पिसु तृष्ट स्वर्ग तस्य मही तले ॥ ९० ॥ जका हो
 रा होरी क मारा क मारी वश मा छ नू ॥ स्त्री वश मा छ नू ॥ धन पनी छ नू ॥ तस्को रणा
 स्वर्ग भंनु य हि हो ॥ ॥ य पुत्रा ले पि तु र्व श्या म पी तां य स्य पोषक ॥ तन्मीत्र
 यत्र विश्वासं श भार्या यत्र निर्वृतिः ॥ ९१ ॥ वातु का वश मा रह्या होरो होया लू या
 दोसू ना कन वा वा भंनु ॥ जसे उं विश्वास र सं हं छ ॥ यो मित्र हो ॥ या का वश मा जो छ
 यो स्वष्टी हो ॥ ॥ यस्य जीवति जीवंति विप्रामिनाश्च का भव वा सफलं जीवितं न

स्य आत्मार्थकाणां जीवति ॥ २३ ॥ जस्माज्जिउं डावां जगामित्र वाधवजिउं देहं न तस्य त-
॥ ३५ ॥ जिवे दे न स्को हो ॥ आपनु ज्युं ता भर को पा ले न मू ॥ सजिवति गुणा यस्य यस्य
धर्मसजीवति ॥ गुणधर्मविहीनस्य निष्फलं तस्य जिवति ॥ २३ ॥ गुणधर्महुं
नामनुष्यजिउं दो भं नु ॥ गुणपनिधर्मपनि नहुं नामनुष्यमया जति हो ॥ गु-
णपनिधर्मपनि नहुं नामनुष्यमया जति हो ॥ वाचा सरस्वति यस्य भार्या ॥ राम ॥
रूपवति सती ॥ लक्ष्मीत्यागवति यस्य सफलं तस्य जीवति ॥ २४ ॥ जस्मा मुख ॥ ३५ ॥
मा सरस्वति दुःखरमा सुन्दरजाति स्त्री दुःखदा न धर्मको सामर्थ्यपनि दुःख न स्को जीय

को सफल ॥ ॥ धर्मार्थकाममोक्षानां यस्यैकायिन विद्यते ॥ अजागरनरसोपि नि-
र्थस्य जीवति ॥ २५ ॥ धर्मस्यार्थकाममोक्षयति चारथोकमा सेकथोक गुणपनि
नहुं नामनुष्ये जिय को निष्फल हो ॥ ॥ धर्मस्य विहितस्य दिनयानि च वि-
क्रिया ॥ सलोहकारवस्त्रे वस्य यं वैव प्रतियनी ॥ २६ ॥ धर्मस्य न भयाका मनु-
ष्यको आयु व्यर्थ जाछ ॥ कामि हरु कालु गा फा त्या कै ना सी जाछ ॥ शत्रोरपि
गुणा वाचा दोषा वाचा गुरोरपि ॥ युक्ता युक्तवचो ग्राह्यं न वाच्यं गुरुनोरपि ॥ २७ ॥
गुणा को कुराना शत्रु को पति गर्ण ॥ दोष आहुं ना कुरा गुरु को पति भन्ने ॥ योग्यं क-

रागर्षा मासरमनमोन्नु ॥ अकर्तव्यं न कर्तव्यं प्राणैकं गतिरपि कर्तव्यं मेव कर्तव्यं
 प्राणैकं गतिरपि ॥ २८ ॥ नगर्षा कामप्राण गलासं मा जानला पापनिनगर्षा गनो
 कामप्राणो न भयापनिगर्षा ॥ २९ ॥ इजै संह संगे न सज नो पिन श्यति ॥ प्रसं न ज
 लमित्याहुः कदतै कलुषी कृतं ॥ ३० ॥ इजै न संगत भयापनि सज न पनि नाशे
 कशोभनानिर्मल जल पनि हिलो लागा का संगलै हिलै जे ॥ ३१ ॥ कृषि जयति ॥ राम ॥
 इभिदं गोभिरं गगतो जित ॥ जिता धर विता नारिव स्वै शास्त्रे जिता सना ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥
 वेदिगर्षा ले इभिदं हरं दू गार्दले अभा गत न जित ॥ धन हु नाले स्त्री वश्य गर्द

वस्त्र लेशास्त्र ले सभा मा जितं ॥ ३४ ॥ इति श्री वानक सार संग्रहे हीनिय सत क समाप्तः
 ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ काले चरि पुना सधिः काले च मित्र संग्रहः ॥ कार्य कारणा मा भित्य काल
 क्षयं तिष्ठति ॥ ३७ ॥ वेला हे रिशत्रु सित पनि मित्र पद ॥ काल हे रि मित्र शित प
 नि विरोध गनु पद ॥ कार्य का हेतु हे रि वृक्षानि मनुष्ये ले समं य का दू ॥ ३८ ॥
 काल पनि भूतानि काल संह रते प्रजा ॥ काल सुप्ते प्रजा गति कालो हि दुर्तिक्रम
 ॥ ३९ ॥ काल ले शराणी पका डं ॥ काल ले प्रजा हरण गद ॥ प्राणी सुत्पा पनि काल ज
 गीर हं ॥ न सर्थ काल नो दू सौ द को हो ॥ ४० ॥ काला त्परो हने वी जं प लं काला

॥३॥ त्वरोहितं ॥ कालास्रवर्त्तने सृष्टिपुनः कालो हि संहरेत् ॥ ३ ॥ काले विजरो व्याको
 उम्मीछ ॥ काले ले फ लाई छ ॥ काले ले सृष्टि गछ ॥ महार पनिका ले ले गछ ॥ त्व
 शिउ तो भू मिरा पश्चव ओके नल मास ता ॥ सर्व संहर ते काल त सा को लो मह
 नर ॥ ४ ॥ आकास दिशा पृथिवी वन्द सूर्य्य अग्नि वायु यो सबै काले ले हछ ॥ त
 सर्थ काल ठु लो छ ॥ किं करिष्य निव क्ता च श्रो ता यच न विद्य ते ॥ नग्न दो
 पनक ग्रा मेरज क विं क रिष्य नि ॥ ५ ॥ सुन्या न भया का ठाई मा वो ला को का प्रयो
 जन छ ॥ नागा को देश मा धो वि को का काम छ ॥ ॥ कदलिवन मध्य स्थो वहि म

॥ राम ॥
 ॥ ३ ॥

दपराक्रम ॥ अविवेक नन रथाने गुणा वारा किं करिष्य नि ॥ ६ ॥ केरा को वन मा ज लै आ
 गो को स कि हरा ड छ ॥ त लै अ विव्य कि मा नि सू छे डे गुणि मा नि को के हि ला गे न ॥
 ॥ ७ ॥ प्रलये भि ग मर्यादा भव किल शागरा ॥ सागरा भे द मिहं ति प्र ल यो पि न
 साधवः ॥ ७ ॥ प्रलय काल मा समुद्र लेप नि मर्यादा द्वा ड छ ॥ साधु जन ले ना के ले
 य नि मर्यादा द्वा दे न ॥ त सर्थ साधु जन ठु लो हो ॥ ॥ मेरु श्वर नि क ल्पां ते मर्यादा
 शागर स्पन्द ॥ प्रति पं न महा सत्वा ने चरं नि क दा च न ॥ ८ ॥ क ल्पां त काल मा सु मे
 रूप र्व न प नि चं ब ल ऊं छ ॥ समुद्र लेप नि आफ नु मर्यादा द्वा ड छ ॥ महा पुरुष

॥ नाना ॥

॥ ३५ ॥

लोमात्रैके लेपनि आप्तुमर्यादा द्वाइ दैन ॥ ॥ विश्रुते त्रिषु च पलां विश्रुतेषां
लगेतप ॥ पारुष्य विश्रुतेना चेया सा धुपु विश्रुते ॥ २ ॥ श्री देउ चंचल कुंछ शाधु
देउ दया कुंछ ॥ बोलगा देउ तपस्या कुंछ नीव देउ छिचरो कुंछ ॥ ॥ साधु सनातन
मात्रेणा भवति देह विक्रिया ॥ उपकार शानेनापि दुर्जन के न गछे ते ॥ १० ॥ साधु जन
देउ हात जो नै मा ॥ फनाश रिर शुद्धा दिछु न ॥ दुर्जन संग सयउ प्रकार गथापनि
आप्नु हुं दैन ॥ ॥ बुध बोधान शस्त्रा निनावध शास्त्र के धयेत ॥ प्रत्यक्ष चक्रे ॥ राम ॥
दीप चंद्रा हिने न प्रश्रुति ॥ ११ ॥ शानिक नेशास्त्र लेवु फाउनु छु ॥ मूर्ख कन हुं दैन ॥ ॥ ३५ ॥

मूर्ख संग संकृत हुं दैन ॥ ॥ अणशोभो निशोभश्च व्याविशोषस्तथैव च ॥ पुनर्वर्द्धयते य
स्मान्नास्मादेष वकारयेत ॥ ५८ ॥ अणकोशो यश्च निशोषश्च व्याविकोशो यश्च
नु ॥ राधा फेरि वदछु न ॥ ॥ उद्देग कलह कंडु शूत मयं परस्त्रिय ॥ निद्रा मैथुन
मालस्य सेवते ते हि वर्द्धते ॥ ५९ ॥ उद्देग रहनु कलह बगण कल्याउनु सुवाषेलनु
परस्त्री गमन गर्नु ॥ निद्रा मैथुन आलस्य यतिथो कज सो ज सो सेवा गनोत सो
नशो वदछु ॥ ॥ परदारा परस्त्रि च परिवाद परस्त्रि च ॥ परिहासा गुरुत्या
नेय तत परि वर्जयेत ॥ ६० ॥ परस्त्री परधन अर्का को चुकली हल नुयतिथो

श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ रगा एवेन पटुर्न चासत्ता एवेन पटुर्न मम अहं उक्ता पटुर्न सर्व मोह पटुर्न मम धर्म मोक्षी पटुर्न विना रावेति ॥
गगुरुत्थानमानगर्नु ॥ ॥ परोक्षकार्यहर्त्तारप्रत्यक्षप्रियवादिन ॥ वज्रनीतादृशं

॥ वा नः ॥

कगुरुत्थानमानगर्तु ॥ ॥ परोक्षकार्यहर्त्तारप्रत्यक्षप्रियवादिन ॥ वज्रनीतादृशं
मित्रं विषकुम्भपयोमुखं ॥ ६१ ॥ पिथ्यापरिविगार्त्तामुष्मां जिघ्रेमवचनवोन्माय
लोमित्रच्छादिडित्तु ॥ यो कलोभन्या विषकाद्यैलामाथितातदहन्माजलोहो ॥
उदगंचक्रेत्तंचकभाष्यकनदीतथा ॥ कुड्यंचकभोज्यंचवर्जयोत्पदितसदा
॥ ६२ ॥ कुदेशकुहत्तिका मकुवरित्रकीलीकुड्यं ॥ कुनदिकुश्रन्त्यतिथोकशा
मिजनलेहोदनु ॥ ॥ कुर्वसीयदिसुपेणारंभायदितिलोतमा ॥ गोपालीमेनकाचैव
वर्जनीयां परस्त्रिय ॥ ६३ ॥ उर्वसीरंभातिलोतमा गोपालीमेनका ॥ श्रमाराजलीरां

राम

484

11611

मिसुवि॥ ॥ भस्मना शुद्धते काशांताम्रश्चास्तेन शुद्धति॥ रजसां शुद्धते नारि न
दीर्घे गेन शुद्धति॥ ८१॥ धरा नीले काशा सुद्ध ऊं हू ता वो अमिला ले शुद्ध ऊं हू ॥
रजस्वरा ले स्त्री जाति शुद्ध ऊं हू न दि वे ग ले व ह्वा को सुद्ध ॥ ॥ पितुरंत पुरंदया
मातुर्दया तम हान स॥ गोषु ह्यात्मा समंदया स्वयमेव कृषि व्रजेत् ॥ ८२॥ ॥
वावु ले श्रं त पुर दिं हू नू आ मा ले भा न्या मा पु न्या उं हू ॥ गाई ले आ पू सं म्म गरि दिं
हू नू आ पू ले द मा हू व स्तु ॥ ॥ कपिला क्षीर पानेन ब्राह्मणी गमनेन च वेदा
क्षीर विचारेण स सुप्रो न र कं व्रजेत् ॥ ८३॥ कैली गाई को दू द घान्या ब्राह्मणी ग

वेदकोवर्गगर्वा

मनगर्वाभुवनरकजांछ ॥ भुवहस्तेनयाभुतेमासमेकनिरंतरं ॥ जीवमाना
॥ वान ॥ भवेदुद्रोमृतश्चानश्चजायते ॥ ८४ ॥ ब्राह्मणालेभूदिकाहातवाठसकमहिना
॥ ५१ ॥ पायाहुंदि ॥ जिउंभयासम्मसुद्रहोमनापद्धिकेकरकोजोतिमाजमंद ॥
सनहिनतुयानारिद्यतहीनंतुभोजनं ॥ वस्त्रहीनमलंकारविद्याहिनदि
जोत्तमः ॥ ८५ ॥ दूदनहुन्यास्त्रीस्यनभयाकोभोजन ॥ नागाकोगहनाविद्यान ॥ राम ॥
भयाकोब्राह्मणसोभाहुंदैन ॥ शोभतेशलिलेयसंशोभतेद्विषतांदिज ॥ ५२ ॥
शोभतेतपसंपुकोब्रह्मणामूलस्यशोभते ॥ ८६ ॥ जलमाकमलकोशोभा

हुंछ ॥ ब्राह्मणतपदेविशोभाहुंछ ॥ शत्रुकोकारनशिपार्शुशोभाहुंछ ॥ भूराकणा
घाउदेविशोभाहुंछ ॥ ८७ ॥ जशोसवंत्रविप्राणांमूर्धानंकलहोत्तवं ॥ पुरुषोत्तमना
रिनांगवानांचतुरांसवं ॥ ८८ ॥ ब्राह्मणकोउच्छाहायज्ञगर्तुमूर्खकोउच्छाहाकलहग
र्तु ॥ स्वास्तिकोउच्छाहायसमृद्धार्थकोउच्छाहाकवल्लोधातधानुहो ॥ अग्निहोत्रफ
लंवेदंशीलंवृत्तिफलंश्रुतं ॥ रानेपुत्रफलानारिद्यतभुक्तफलंभुक्तं ॥ ८९ ॥ वेदकोफ
लस्यग्निहोत्रहुनूंस्त्रीकोफलरनिपुत्रहो ॥ धनकोफलधानुदिनु ॥ अग्निद
हतितापेणसूर्योदहतिरसिभिः ॥ राजादहतिदंडेणतपशाब्राह्मणोदहेतुः ॥

२ पुराणानुयाकोफलशिलव्रंतहो

वान
५२

८२ ॥ आगोकातापलेपोलूछ श्रीसूर्यकाकिरणालेपोलू ॥ राजाकाडंदलेपनि
पोलूछ बालाकातापस्यालेपोलूदछ ॥ ॥ शनशाकं मृते मांशं करेणमथि
तंन्यपि ॥ तर्जनीदन्तिद्युष्टं चतुर्लपंगोमांसभक्षनं ॥ ८० ॥ नालुकापातकोल
कारिमन्माकोकामासुतर्जनी ॥ अंगुलीलेदानमाद्यसंतु हातलेविदोल्या
कोदहि ॥ यन्निठोकगोमासतुल्यहो ॥ ॥ नहंन्यातंमतिदद्याधन्यमानेन
दृश्यते ॥ शंकात्रयंपरित्यज्यभक्षमांसयुधिष्ठिर ॥ ८१ ॥ आकुलेनमानुमा
णाकणावचननदितु ॥ नान्माकोनहेरुयोतिराहो डिमासुआयालेपापहै

॥ राम ॥

५२

ASMA ARCHIVES

24401